परिपूर्ण जीवन

मनुष्य का जीवन परिपूर्ण होना चाहिए।

मनुष्य के जीवन में कुछ थोड़े से अंश नहीं बल्कि सभी अंश होने चाहिए। उसे सभी कलाओं में आगे बढ़ना चाहिए। सभी विद्याएँ सीखनी चाहिए। जीवन दीर्घायु व उपयोगी होना चाहिए। उसे अपने लिए और अपने परिवार के लिए जीना है। अपन गाँव और शहर का उद्धार करना है।

यदि हम स्वयं को भगवान का रूप समझ सकें तो यह सब बहुत आसान है। हर व्यक्ति भगवान ही है। अहं ब्रह्मास्मि' इस स्फूर्ति से जीवन को परिपूर्ण बनाएँगे और सबके जीवन को भी परिपूर्ण बनाएँगे।